

## ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन



किरन गुप्ता  
शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र)  
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय  
इलाहाबाद (उ०प्र०)

**सारांश—** अध्ययन का शीर्षक ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन है। उद्देश्य के रूप में शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्ता ने वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। जनसंख्या के रूप में इलाहाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा-10 में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में इलाहाबाद जनपद के 4 माध्यमिक विद्यालयों का चयन स्तरित यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयन कर उसमें अध्ययनरत् 150 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से किया गया है। डॉ० टी०आर० शर्मा द्वारा निर्मित 'एकेडमिक अचीवमेंट मोटीवेशन टेस्ट' का प्रयोग किया गया है जिसमें कुल 38 प्रश्न हैं। निष्कर्षतः ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

**की—वर्ड—** ग्रामीण, शहरी, माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा।

### प्रस्तावना—

मानवीय जीवन ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। जिसके दो पहलू हैं जैविक तथा सामाजिक या सांस्कृतिक जहाँ भोजन तथा प्रजनन जैविक जीवन को बनाये रखने तथा बढ़ाने के लिए आवश्यक हैं वही शिक्षा सांस्कृतिक जीवन के लिए जीव विज्ञान की दृष्टि से वनस्पतियों तथा जीव दोनों के समान कहे जा सकते हैं परन्तु सामाजिक या सांस्कृतिक जीवन केवल मनुष्यों में ही पाया जा सकता हैं क्योंकि सिर्फ मनुष्य में ही शिक्षित होने की क्षमता है। जॉन डीवी ने कहा कि जिस तरह भोजन, प्रजनन जैविक जीवन की आवश्यकता है उसी तरह शिक्षा सामाजिक जीवन की शिक्षा के माध्यम से मनुष्य नये विचारों तथा जीवन शैलियों को अपनाने की कोशिश करता है शिक्षा से ही वह अपनी बौद्धिक क्षमता तथा ज्ञान को बढ़ाकर प्रकृति को अपनी इच्छा के अनुरूप नियंत्रित करने का प्रयास करता है तथा इस ज्ञान को आने वाली पीढ़ियों को देता है। मनुष्य का जीवन सिर्फ जैविक ही नहीं वरन् सामाजिक क्रियाओं से नियंत्रित होता है। जहाँ जैविक क्रियाएं अनुवंशिकता से निर्देशित होती है वहीं शिक्षा सामाजिक अनुवंशिकता कही जा सकती है। सिर्फ जीव अनुवंशिकता की दृष्टि से मनुष्यों तथा पशुओं में कोई फर्क नहीं रह जाएगा अतएव हम कह सकते हैं कि यह एक सामाजिक अनुवंशिकता है जो उसे सृष्टि को नियंत्रित करने की क्षमता देती है। इस तरह शिक्षा एक महत्वपूर्ण जैविक क्रिया कही जा सकती है।

**जॉन लॉक के अनुसार,** जिस तरह कृषि पौधों को उसी तरह शिक्षा मनुष्य को विकसित करती है।

बिना किसी प्रेरणा से प्रेरित हुआ व्यक्ति किसी कार्य को नहीं कर सकता है। अभिप्रेरणा एक ध्यानाकर्षण एवं प्रलोभन की कला है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति के अन्दर किसी कार्य को करने की इच्छा एवं जिज्ञासा उत्पन्न होती है अर्थात् मानव व्यवहार कुछ प्रेरकों द्वारा ही नियमित, प्रदर्शित एवं रूपान्तरित होता है। अभिप्रेरणा अधिगम की आवश्यक अंग है इसके द्वारा किसी क्रिया को सीखने के लिए बालक में उत्साह उत्पन्न किया जा सकता है। अभिप्रेरणा आन्तरिक उत्तेजना एवं बाह्य उत्तेजना दोनों हो सकती है। अभिप्रेरणा के संदर्भ में **ड्रेवर ने लिखा है—** “अभिप्रेरणा एक भावात्मक क्रियात्मक कारक है जो चेतन अथवा अवचेतन ढग से निर्धारित परिणाम अथवा लक्ष्य की ओर व्यक्ति के व्यवहार की दिशा को निर्धारित करने के लिए क्रियाशील होता है।”

अभिप्रेरण व्यक्ति के अन्दर होने वाला शक्ति परिवर्तन है जो भावात्मक जाग्रति तथा पूर्वानुमान उद्देश्य द्वारा वर्णित होता है। इस सन्दर्भ में **डी०एस० यादव** ने अभिप्रेरणा को मात्र आन्तरिक उत्तेजना मानते हैं। **डी०ए० यादव** के अनुसार, “मनोवैज्ञानिक अर्थ में अभिप्रेरणा से अभिप्राय केवल आन्तरिक उत्तेजनाओं से होता है। जिन पर हमारा व्यवहार आधारित होता है। मनोवैज्ञानिक अर्थ में बाह्य उत्तेजनाओं को कोई महत्व नहीं दिया जाता है।”

मनुष्यों में अभिप्रेरक तत्वों भूख, प्यास, काम, नीद, विश्राम आदि जन्मजात अभिप्रेरक पाए जाते हैं। इनके अभाव में मानव जीव की कल्पना नहीं की जा सकती है। मनुष्य अपने बौद्धिक क्षमता के सहारे कुछ अभिप्रेरक तत्व जैसे अभिरुचि, आनन्द, जीवन लक्ष्य आदि व्यक्तिगत तो सामुदायिकता, स्वाग्रह, युद्ध, प्रेम आदि सामाजिक अभिप्रेरक तत्वों की खोज किया है। माध्यमिक स्तर तक के विद्यार्थियों में अर्जित अभिप्रेरक तत्वों का विकास आवश्यक होता है। ऐसे अभिप्रेरक तत्वों से संवेगात्मक बुद्धि सही दिशा प्राप्त करती है।

व्यक्ति प्रतिदिन अपने जीवन में, अपने घर में, परिवार में, समाज में तथा आसपास के लोगों में उपलब्धियों को पाते हुए देखता है और उनके सुखी एवं समृद्धि से परिपूर्ण वातावरण से कुछ न कुछ सीख लेता है और यह सीख उसको अपने खुद की उपलब्धि के लिए उसे प्रेरित करती है। जिसे हम अभिप्रेरणा कहते हैं। बालक पढ़ाई के दौरान जब अपने आसपास के लोगों को पढ़ाई में सफल होते हुए देखता है तो वह स्वयं को भी उसके समान बनाने की कोशिश करता है और इसके लिए वह विभिन्न प्रकार के गतिविधियों व प्रयासों को करता रहता है। व्यक्ति यह सब शिक्षा से सम्बन्धित गतिविधियों को शैक्षिक अभिप्रेरणा के द्वारा ही कर पाता है। जिसे हम शैक्षिक अभिप्रेरणा कहते हैं। यह अभिप्रेरणा उसके मस्तिष्क में इतना बल प्रदान करती है कि वह अपने शैक्षणिक कार्यों को और अधिक परिश्रम, लगन व तन्मयता के साथ करने की शक्ति प्राप्त कर लेता है।

बालकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा में सबसे अधिक प्रभाव पारिवारिक वातावरण एवं माता-पिता के साथ-साथ उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पड़ता है। जैसा कि कहा गया है परिवार बच्चों का प्रथम पाठशाला होता है एवं माँ उनकी प्रथम शिक्षिका होती है। अतः परिवार एवं माँ का शैक्षिक अभिप्रेरणा पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार प्रभाव डालता है। पूर्व अध्ययन में **मौला, जे.एम. (2010)** ने अध्ययन में इंगित किया कि विद्यार्थियों के गृह वातावरण के छः विमा पिता के व्यवसाय, माता के व्यवसाय, पिता के शैक्षिक योग्यता, माता के शैक्षिक योग्यता, पारिवारिक आकार एवं माता द्वारा घर में शिक्षा के लिए छूट का शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक एवं धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। **चोहान एवं खान (2010)** ने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक समर्थन की विमा गृह वर्क एवं शैक्षिक क्रियाकलाप का सार्थक प्रभाव पड़ता है। **व्यास, भगवतीलाल एवं शर्मा, मुकेश (2014)** ने निष्कर्ष में पाया कि अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालय विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार की विमा कक्षा-कक्ष व्यवहार तथा समय प्रबन्धन का गृह वातावरण से सार्थक एवं धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

विद्यालयी वातावरण के साथ-साथ उनके शिक्षकों का पड़ता है। अलथाफ लिण्डे एण्ड मासन (2007) ने अध्ययन में पाया कि जिन कक्षाओं का वातावरण अच्छा एवं अध्यापकों का छात्रों के प्रति दृष्टिकोण अच्छा था उस कक्षा के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा अन्य कक्षाओं के छात्रों की अपेक्षा अधिक थी। उठवाल, राहुल (2017) ने निष्कर्ष रूप में इंगित किया कि शिक्षक की भूमिका सर्वप्रथम एक मनोवैज्ञानिक के रूप में है। शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह कक्षा में उपस्थित विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, प्रेरणाओं एवं मनोवृत्तियों की जानकारी रखें। शिक्षक विद्यार्थियों को समझने में जिस सीमा तक सफल होते हैं उसी समय तक उनका अध्यापन प्रभावी होता है तथा विद्यार्थी उनकी शिक्षा से लाभान्वित हो पाते हैं। अतः एक सफल शिक्षक ऐसे विद्यार्थी की सहायता करता है और उसकी समायोजन समस्या के समाधान का प्रयास करता है।

अतः वर्तमान परिदृश्य में शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, व्यक्तित्व, संवेगात्मक, सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। अतः अध्ययनकर्त्री द्वारा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों पर यह अध्ययन किया गया है।

### **समस्या कथन—**

**ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।**

### **अध्ययन का उद्देश्य—**

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

### **परिकल्पनाएँ—**

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है—

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

### **शोध विधि—**

शोध समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्त्री ने वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

### **जनसंख्या—**

जनसंख्या के रूप में इलाहाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा-10 में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को जनसंख्या माना गया है।

## **न्यादर्श—**

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में इलाहाबाद जनपद के 4 माध्यमिक विद्यालयों का चयन स्तरित यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयन कर उसमें अध्ययनरत् 150 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से किया गया है।

## **उपकरण—**

डॉ० टी०आर० शर्मा द्वारा निर्मित 'एकेडमिक अचीवमेंट मोटीवेशन टेस्ट' का प्रयोग किया गया है जिसमें कुल 38 प्रश्न हैं।

## **प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीक—**

प्रदत्तों के संकलन द्वारा परिगणन के पश्चात् निर्मित की गयी शून्य-परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए टी-अनुपात तकनीक का उपयोग किया गया है।

## **ऑँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या—**

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

### **साराणी संख्या—1**

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, तथा टी-अनुपात

क्रमांक	क्षेत्र	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण	69	24.22	4.82	1.35	0.05
2.	शहरी	81	25.22	4.18		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमानों के अन्तर का टी-अनुपात का मान 1.35 है जो कि सार्थक स्तर .05 तथा मुक्तांश 148 के सारणी मान 1.98 से कम है अर्थात् मध्यमानों में असार्थक अन्तर है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात् माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

### **साराणी संख्या—2**

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, तथा टी-अनुपात

क्रमांक	क्षेत्र	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण	41	23.49	4.59		
2.	शहरी	35	26.77	4.43	3.16	0.05

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमानों के अन्तर का टी—अनुपात का मान 3.16 है जो कि सार्थक स्तर .05 तथा मुक्तांश 74 के सारणी मान 2.00 से अधिक है अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त होती है अर्थात् माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है अर्थात् शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अपेक्षा उच्च है।

3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

### साराणी संख्या—3

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, तथा टी—अनुपात

क्रमांक	क्षेत्र	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण	28	25.29	5.04		
2.	शहरी	46	24.04	3.60	1.15	0.05

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमानों के अन्तर का टी—अनुपात का मान 1.15 है जो कि सार्थक स्तर .05 तथा मुक्तांश 72 के सारणी मान 2.00 से कम है अर्थात् मध्यमानों में असार्थक अन्तर है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात् माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

### निष्कर्ष—

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये—

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है अर्थात् शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अपेक्षा उच्च है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**निष्कर्षतः** ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया समान शोध काला, पी. चन्द्रा एवं शिरलिन, पी. (2017) ने अध्ययन में इंगित किया कि लिंग, कॉलेज के क्षेत्र, विद्यार्थियों के निवास स्थान एवं कॉलेज के प्रकार के आधार पर विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है समान शोध अध्ययन सिंह एवं बघेल (2017) ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- साराह ई0 अलथाफ, क्रिस्टेन जे0 लिण्डे जॉन मासन, (2007) 'हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स एकेडमिक एचीवमेन्ट स्टूडेण्ट मोटिवेशन, क्लासरूम कम्प्यूकेशन, डिजरटेशन थीसिस ऑन लाइन सर्वथान।
- उठवाल, राहुल (2017). एक शिक्षक की प्रेरणा, उत्प्रेक के रूप में चुनौतियाँ एवं समाधान, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च, वॉल्यूम-3, इश्शू-5, पृ0 06-08
- काला, पी. चन्द्रा एवं शिरलिन, पी. (2017). ए स्टडी ऑन एचिवमेण्ट मोटिवेशन एण्ड सोशियो-इकोनॉमिक स्टेट्स ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट्स इन तिरुनेवल्ली डिस्ट्रिक, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च ग्रन्थालय, वॉल्यूम-5, इश्शू-3, पृ0 57-64
- चोहान एवं खान (2010). इम्पैक्ट ऑफ पैरेन्टल सर्पोट ऑन द एकेडमिक परफार्मेन्स एण्ड सेल्फ-कन्सेप्ट ऑफ द स्टूडेन्ट, जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड रिफलेक्शन इन एजुकेशन, वॉल्यूम-4, नं0 1, पृ0 14-26
- मौला, जे.एम. (2010). ए स्टडी ऑफ द रिलेशनशिप बिटविन एकेडमिक एचिवमेण्ट मोटिवेशन एण्ड होम इन्वायरमेण्ट एमंग स्टैण्डर्ड ऐट पीपुल्स, एजुकेशनल रिसर्च एण्ड रिव्यूस, वॉल्यूम-5(5), पृ0 213-217
- व्यास, भगवतीलाल एवं शर्मा, मुकेश (2014). अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी यों के अधिगम व्यवहार का गृह वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का अध्ययन, इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज, वॉल्यूम-1, इश्शू-2, पृ0 2-5
- सिंह एवं बघेल (2017). किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशन एण्ड रिसर्च, वॉल्यूम-2, इश्शू-5, पृ0 79-83